चौ० चरण सिंह, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय

हिसार, हरियाणा

lexz flQkfj'kas Qlyxksbh

उद्यान विभाग, हरियाणा

उद्यान भवन, सेक्टर–21, पंचकुला–134116

दूरभाष नं : 0172–2582322, वेबसाइट : www.hortharyana.gov.in

y?kq d"kd d`f"k&O;kikj la?k gfj;k.kk ¼lQd½

m|ku Hkou] lsDVj&21] iapdqyk&134116] gfj;k.kk

दूरभाष : 0172–2581322, ई–मेल : sfacharyana@gmail.com

वेबसाइट : www.hortharyana.gov.in/en/sfach,

www.sfacharyana.org.in

gfj;k.kk d`f"k fo'ofo|ky; }kjk flQkfj'k dh xbZ fdLesa

1.	उन्नत किस्में	अगेती किस्म मध्यम पछेती किस्म पछेती किस्म	पूसा कातकी हिसार –1 स्नोबॉल–16
2.	भूमि की तैयारी : फूल गोभी अनेक प्रकार की मिट्टी में उगाई जा सकती है। भूमि को भली–भांति जोतकर मिट्टी को हल्का ओर भूरभूरा बना लेना चाहिए।		
3.	बिजाई का समय	अगेती किस्म (पौधशाला में बिजाई) मध्यम किस्म (पौधशाला में बिजाई) पछेती किस्म (पौधशाला में बिजाई) पौधरोपण	मई–जून, पौधरोपण जून–जुलाई मध्य जुलाई – अगस्त के पहले सप्ताह अगस्त से मध्य सितम्बर तक अक्तूबर–नवम्बर नवम्बर से दिसम्बर
4.	बीज की मात्रा	अगेती किस्म के लिए मध्यम व पछेती किस्म के लिए	300–500 ग्रा. प्रति एकड़ 250–300 ग्रा. प्रति एकड़
5.	पौध तैयार करना	क्यारियों की सख्या क्यारियों का साईज़	15–20 प्रति एकड़ (3.0 ग्र 10 मी.) 15 से.मी. ऊची क्यारियों पर
6.	बिजाई से पहले बीज का उपचार	1 कि.ग्रा. बीज की मात्रा के लिए 2.5 ग्रा. एमीसान या कैप्टान या थाइरम दवा से उपचार करें।	
7.	रोपाई का समय	अगेती किस्म (डोलियों पर रोपाई) मध्यम पछेती किस्म (क्यारियों पर रोपाई) पछेती किस्म (क्यारियों में रोपाई)	45 ग्र 30 से.मी. (डोलियों पर) 60 ग्र 60 से.मी. (क्यारियों पर) 45 ग्र 45 से.मी. (क्यारियों में)
8.	खाद व उर्वरक (प्रति एकड़)	गोबर खाद नाईट्रोजन फास्फोरस पोटाश जिंक सल्फेट	20 टन 50 कि.ग्रा. (200 कि.ग्रा. किसान खाद) 20 कि.ग्रा. (120 कि.ग्रा. सुपर फास्फेट) 20 कि.ग्रा. (32 कि.ग्रा. म्यूरेट आफ पोटाश) 8–10 कि.ग्रा
नोट : पूरी गोबर खाद, फास्फोरस तथा पोटाश और 1/3 नाइट्रोजन की मात्रा पौध लगाने से पहले तथा बाकी नाइट्रोजन बाद में खड़ी फसल में दो बार करके छिड़क देनी चाहिए।			
9.	सिंचाई	अगेती किस्मों में पछेती किस्मों में	5–6 दिन के अन्तर 10–15 दिन के अन्तर
10.	खराब (सोडिक) पानी के साथ जिप्सम का प्रयोग	एक मि.ली. तुल्यांक प्रति लीटर आर.एस.सी. को निर्रस्थीकरण करने के लिए जिप्सम 32 कि.ग्रा. (80 प्रतिशत शुद्धता) प्रति सिंचाई प्रति एंकड़ तथा 8 टन गोबर की सड़ी हुई खाद प्रति एकड़ डालने से तैलिय पानी का प्रभाव कम हो जाता है।	
11.	खरपतवार नियंत्रण	रासायनिक खरपतवार नियन्त्रण	पैण्डीमैथालिन दवा 400 कि.ग्रा. प्रतिएकड़ (स्टोम्प 30 प्रतिशत का 1.3 लीटर)

13.	तुड़ाई का समय	फूलगोभी की फसल उस समय काटनी चाहिए जब फूल उचित आकार के हो जाएं और परिपक्वता उचित स्थिति पर पहुंच जाएं। फूल ठोस होना चाहिए और टुकड़ों में विभाजित नहीं होना चाहिए। किस्म के अनुसार अगेती किस्मों में रोपाई के 60–80 दिनों बाद, मध्यम किस्मों में 90–100 दिनों बाद तथा पछेती किस्मों में 110–120 दिनों बाद फूल तैयार हो जाते हैं। पौधें को फूल से काफी नीचे से काटा जाता है ताकि डंठल फूल से लगा रहे जो परिवहन के दौरान फूल की रक्षा करता है।	
14.	हानिकारक कीड़े		

कीड़े	लक्षण	रोकथाम एवं सावधानियां	
डायमंड बैक मोथ	यह हरे रंग का छोटा कीट है जो जरा–सा छूने पर एकदम से उछल पड़ता है। इसकी छोटी सूण्डियां पत्तियों को खुरच–खुरच कर खाती हैं तथा सिर्फ सफेद झिल्ली छोड़ देती हैं। बड़ी सूण्डियां गोल सुराख बनाती हैं। इसका प्रकोप अगस्त से शुरु हो जाता है ।	400 ग्राम बेसीलस थयूरिन–जिएंसिस (बायोआस्प) घुलनशील पाउडर, 300 मिली डायजिनान 20 ई.सी. या 60 मि.ली डायक्लोरवास (नुवान) 76 ई.सी. या 400 मि.ली. मैलाथियान 50 ई.सी. को 200–250 लीटर पानी में घोलकर एक एकड़ में छिड़काव करें। अगला छिड़काव 7–10 दिन के अंतर पर करें।	
तम्बाकू की सूण्डी	इस कीट का प्रकोप कहीं–कहीं होता है। इसकी छोटी सूण्डियां एक जगह इकट्ठी रहती हैं परन्तु बड़ी होने पर सारे खेत में फेल जाती हैं। बड़ी सूण्डी पीले–भूरे रंग की होती हैं जो हरी से बैंगनी चमक देती है। इसका प्रकोप सितम्बर से नवम्बर तक होता है।	क्रमांक 2 से 5 तक बताए कीडों की रोकथाम के लिए 400 मि.ली मैलाथियान 50 ई.सी. को 200–250 लीटर पानी में घोलकर प्रति एकड़ फसल पर छिड़काव करें। दस दिन के अंतर पर अगला छिड़काव करें।	
कबड़ा कीड़ा	हरे रंग की यह सूण्डी लूप बनाकर चलता है तथा बन्द गोभी की सूण्डी की तरह नुकसान करता है।		
चेपा	कीट के शिशु व प्रौढ़ रस चूसते हैं जिससे पौधों की बढ़वार रुक जाती है।		

15.	बिमारियां व उसके लक्षण			
	बिमारियां	लक्षण	रोकथाम	
क.	गलन रोग	अग्रेजी भाषा के वी के आकार के पीले धब्बे पत्तें के किनारों पर दिखाई देते हैं जो बाद में गहरे–काले व भूरे हो जाते हैं। पत्तों की नसें काली पड़ जाती हैं और पत्ते सूखकर गिर जाते है।	बीज ऐसे क्षेत्र से प्राप्त करें जो जीवाणुज रोग से मुक्त हो और पौध भी रोगरहित हो। बिजाई से पहले एमिसान या कैप्टान या थाईरम 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीज का उपचार करें। फसल पर स्ट्रैप्टोसाईक्लीन 200 मि.ग्रा. को एक लीटर पानी में मिलाकर तथा 0.1 प्रतिशत कॉपर ऑक्सीक्लोराईड–50 एक ग्राम प्रति लीटर में घोलकर 2–3 छिड़काव करें। फसल कटाई के बाद बचे हुए, बीमारी वाले कूड़े–कचरे के ढेर को जलाकर नष्ट करें।	
ख.	डाऊनी मिल्डयू	छोटे पिन के आकार के अनेक धब्बे बनते हैं जो बाद में आपस में मिलकर बड़ा रुप ले ले लेते हैं और उनका रंग पीला अथवा हल्का भूरा हो जाता है। अत्यधिक रोगग्रस्त पत्तियां सूख जाती हैं, रोग की उग्र अवस्था में फूल भी भूरे हो जाते हैं। असामयिक बारिश रोग की उग्रता बढ़ाने में सहायक है।	रोग के लक्षण दिखाई देने पर 400 ग्राम प्रति एकड़ मैन्कोजेब /इण्डोफिल एम–45 को 200 लीटर पानी में मिलाकर लगभग 10–12 दिन की अवधि पर 3–4 छिड़काव करें। कोई चिपकिने वाला पदार्थ, जैसा कि प्याज की बीमारी में बताया गया है, अवश्य मिलाएं।	
ग.	आद्रगलन रोग	पौधशाला के इस रोग में अंकुरण से पहले व बाद में दोनों ही अवस्थाओं में पौध मर जाती है।	बिजाई से पहले बीज का एमीसान या कैप्टान से (2.5 ग्राम दवा प्रति किलोग्राम की दर से) उपचार करें। पौधों के निकलने पर 0.2 प्रतिशत कैप्टान के घोल का बिजाई के तीसरे व दसवें दिन छिड़काव करें। नर्सरी तथा रोगी खेत में तीन वर्ष का फसल–चक्र अपनाएं।	
घ.	आल्टरेनिया अंगमारी	पत्तों पर गोल आकार के पीले–भूरे धब्बे बनते हैं। बीज वाली फसल में फलियों पर भी भूरे धब्बे बनते हैं।	रोकथाम के लिए वही उपाय अपनाएं जो कि डाऊनी मिल्डयू के लिए बताया गया है।	

ukV % ;g lexz fl Qkfj'ksa gfj;k.kk d`f"k fo'ofo|ky;] fglkj dh lexz fl Qkfj'kksa ij vk/kkfjr gSA

bues ls dN lexz fl Qkfj'ksa lCth mRd"Vrk dsUnz ij ifj{k.k ij vk/kkfjr dh xbZ gSA